Appendix -1 A

परिशिष्ट १ --अ

अप्रकाशित हिन्दी रचना

अमृतकला रमेणी

: फा०गु० सा० स० बम्बई, ह० लि० पो० संख्या- ३४६ :

श्री गुरुभ्यो नमः अमृतकला रमेणी लिख्यते । सामेरी सर्द ।

संतो सूक सेहेज की सार, और गुरु गम्य का आधार   द्रुपद.

अमृतकला आनंदघन अव्यय अवाच अरूप,

आपा पर बुयन पर्म नीध्य अदार अकल अनुप।   संतो -१

अमृत कला आनंदघन, केहेन सूनन सी नाहि,

आपे अखे पद उलसे, तब कछु सूत्यें सहराहे ।   संतो-२

अमृतकला आनंदघन परापार स्थित्य कीन

च्यारुते न्यारी सदा आपे आप की कीहीन।   संतो-३

अमृतकला आनंदघन बीन गुहा परतीत

ओर सबे ओरे भई बादा द्वीत अद्वीत ।   संतो-४

अमृतकला आनंदघन ओमकार की आद्य

हे न्यर्गुन सरगुन जेसा को कहे आद्य अनाद्य ।   संतो-५

अमृतकला आनंदघन पींड नहीं परपंच

आपे मासे आप की और न मले रंच ।   संतो-६

अमृतकला आनंदघन शबुदातीत सदाई

प्राये शबुद आकाश गुन केसे तहां लग जाई ।   संतो-७

अमृतकला आनंदघन संसवेद सो बेन

तांहां को कहे को सुने ज्यांहां हे आपा सन ।   संतो-८

अमृतकला आनंदघन बीना चीत की सूझ्य
शब्द सरीखा केहेनकुं हे बीन रसना का गुझ्य । संतो-९

अमृतकला आनंदघन परम पद की सेय्य
एतो लक्ष परम तत्व का खोजी न पेख्यि ।' संतो-१०

अमृतकला आनंदघन बीनकारण उल्लास
स्वे तांहां घे घ्याता कहां जांहां नही आद्य अनाद्य। संतो-११

अमृतकला आनंदघन नीर्गुन सगुन नाहि
सदा ज्युं की त्युं ही हे स्वे होये सुर्त्य सहरार । संतो-१२

अमृतकला आनंदघन पंच पंचन का ठाठ
को कहे न्यास्त ने आस्त हे को कहे बाढ न घाढ । संतो-१३

अमृतकला आनंदघन जाकी दृीग भई ओर
आपे सो उलटी भई जे थी मन की दोर । संतो-१४

अमृतकला आनंदघन आद्य अंत ना बीच
आपे ज्युं की त्युं सदा चेतन कु नहीं मीच । संतो-१५

अमृतकला आनंदघन जे कोई हे सोई हे ज
केह्वे कु दुजा नही तो को बांधे पेज । संतो-१६

अमृतकला आनंदघन बीना अर्क उद्योत
अहीं तो जीव सो शिव हे जीव सीव सो ओत प्रोत । संतो-१७

अमृतकला आनंदघन जांहां कछु केह्वे नां हे
जे कोई अवाच वाचा मध्ये अचानक सेन बुझाये । संतो-१८

अमृतकला आनंदघन जांहां नीगम को लक्ष
केहेत केहेत हारे जबे पाछे रहा अलक्ष । संतो-१९

अमृतकला आनंदघन नीज पद जाको नाम
ए तो तांहां की चेतना अमृतकला आराम । संतो-२०

अमृतकला आनंदघन अमृत अरवण की लहेर
जब अचानक उपजे सो ग्रहे गैअर गहेर । संतो-२१

अमृतकला आनंदघन उपजीने अलपाय
एहे आपे परम नीध आपे आप सहराय । संतो-२२

अमृतकला आनंदघन अजब जाही को चाल
सेहेजे लौकीक लेख बीन उपजे अलौकीक फाल । संतो-२३

अमृतकला आनंदघन सदा मोहोल एक सांन
सदा घे ख्याता बीना सा तुटन का नहीं तान । संतो-२४

अमृतकला आनंदघन बीन भोगीका भोग
एही पीबो आकाश को सेहेज साधना ज्योग । संतो-२५

अमृतकला आनंदघन जहां गुन नीरगुन ही बाच
ए तो ज्युं का त्युं ही स्वे सकल शबुद अवाच्य । संतो-२६

अमृतकला आनंदघन ज्या घट उपजी होय
देखी चाखी केहे अखो अमृतकला सो सोय । संतो-२७

इति श्री अमृतकला रमेणी संपूर्णम् ।

-0-0-0-0-0-0-0

Appendix - 1 Aa

परिशिष्ट, १-आ

अप्रकाशित हिन्दी रचना

पद

: डा. मंजुलाल मजमुदार के पास से उपलब्ध :

।। राग आशावरी ।।

।१। संतो ज्ञानी त्यां कली केसा रांम जेसे का तेसा ।। टेक ।।

सत जुगा त्रेता द्वापर कलिजुग लक्षण न्यारा न्यारा

उत्तम मध्यम गुंण करम अनेका राम सबन में प्यारा ।।१ ।।

उत्तर दक्षिण पुरव पश्चिम नभ के लेषे नाहि मधवासी

क्लषे दसोदस परिब्रह्म जुं का त्युं हि ।। २ ।।संतो ।। २

जे कोये ज्ञानी नर अणलिंगी ज्याका लत पत व रूपा

वांकु काल करम नहीं जुथल सुर्य न लागे धुपा ।। संतो ।। ।।३।।

गुरुमुषि निरमल रहेत नराला मनमुषि क्रम लागा

कहहे अखो निंद्रा तहां सुपना तगना सतंतर जागा ।।४।। ।।संतो ।।

।२। लोका देह दरसन में मूला पिंडीत जांण अति डुला ।।टेक ।।

जप तप संजम सो को ताके वन तिरथ में वासा

कहे राम मेलापा एसे होवे ए सब मन की प्यास । लोका ।

सुक्रित दुक्रित मन का रंजन मनरंज संसारा

मनकि रीज बीज में सब हि रांम न देष्या न्यारा । लोका । :२:

तत्वज्ञानी सोक्रत मां नावे अनभव साष विचरणा
जनम मरण गुंण च्यार अवस्था देहकुं मांने करणा । लोका । ३
स्वांगी वादि देह अमीमांनी ज्या कुं ज्ञानी कान न जागा
पुरण ब्रह्म कुं सो न पछांने अषा मरम नहि मागा ।। लोका ।। ४

३। देह शो रांम नहि पिंड काचा चेतन रांम सदोदित साचा टेक
चौद भोवन का मेहेल बनाया वण थंभा जिन धरिया
सोतो रांम भोसे नहि न्यारा लष चोरासी वीस्तरीया ।। देह ।। १
ज्युं दरिया मध्य होत परपोटा युं राम मधे पिंड मेरा
परपोटा भीतर नाव न चाले है सब पांनि केरा ।।देह ।।
ज्यां थी पंड ब्रह्मांड है ज्यांथी राम स्वतंतर पुरा
सुघरा होये सो समरस पेले नुंगरा जाये अघुरा ।। देह ।। ३
नां भो जीव सीव का दावा नांभो भीतर बारा
आद्य अंत्य मध्य परिब्रह्म पुरण वांज्य का पुत सोनारा ।। देह ।। ४

: गु० व० सो० अहमदाबाद, ह०लि०पो० संख्या ११६ :

पद ५८ ।। राग धन्या ।।

:४: ग्यानी तु ग्यान विचार ।। ज्यानी तुं जांन ले ।।
काकी स्व्रिष्ट बांधु काकु ग्यान ।। काहा का विवेक बिचारा ।।
पानी का पेच पवन का जांमन ।। बुम्फत सर्व संसारा ।।१।। ग्यानी
बुजे बरन करन कछू नां ही ।। सिर बिना सिर केसा ।।
आकाश कुसुम बेहेके तांई ।। बास तनु का तेसा ।। २ ।। ग्यानी

वासन के ज्युं बरन गुन नांही ।। बु विवेक बिस्तरेया ।।
सपन कृत एह सपना तांही ।। जात बरन कुल क्रीया ।।३।। ग्यानी
क्रिया कर्म लागे किस भाते ।। जो करता ओल पांना ।।
समझे समरस भयो सो न्यारा ।। अब सेहेजे दीसि सांनां ।।४।। ग्यानी

पद ५६ ।। राग धन्या ।।

:५: अनमे तषात बिराजे सोई ।। पांचपांच के भये परांगत ।।
निज घरमां स्थित होई ।।१।। अनमे ।।
च्यारु का ज्यां हां चलन न चाले ।। तीन न पावे सोई ।।
पांचुं खेले पांचु सहेली ।। दुर परे काहा दोई ।।२।। अनमे
दश का उषाल नही मुष आगे ।। निकट न आवे कोई ।।
च्यारुं बिच बडी पटरामन ।। सो रही नित जोई ।।३।। अनमे
च्यारुं बात करे मुष आगे । सो न सके तांहां कुई ।।
सोतु आसन बेस सो न्यारा ।। ज्यां ह्यां जांन न पावे लोई ।।४।। अनमे

।। राग आसावरी ।।

:६: संतो सदोदित राम हमारा ।। ज्यांहां नही रेहन दन का अंधेरा ।।१।।
लिंग भंग रंग नही ओ आकु । संघ नही कोये सार ।।
हुं नहीं तुं नही ते नही ।। क्यां हाथा भीतर बाहारा ।।२।।
वयण गेहेण नयण नही घाटा ।। चितवत थे चित लय पावे ।।
दृष्ट मुष्ट अगोचर गोचर ।। नेडे दुर क्या गावे ।।३।।

जे जे पदार्थ मन रावे ।। सोये नही मुज रांमा ।।

मन अमन अवलिंग विवर्जित ।। स्वे रहे निज धांमा ।।४।।

निज प्रतीत उपजी घर जाके ।। क्या सुन्यार्थे न्यारा ।।

राम सदोदित मुकृत अषा ।। वेद बुध्ये प्यारा ।।५।।

धं० ।। राग धन्या ।।

:७: हरतम ज्यांनो बात हमारी ।।

जो जो घाट बांधु बातन का ।। सो बुध्य तम मध्य हारी ।।हर ।।

परा पसंती मध्यमा कहीए ।। वैषरी कुं न बिचारी ।।

ओ आके पार रहि तम पोषो ।। एसी अति गत्य न्यारी ।।२।। हर

अंगो अंग प्रती अंग विचारु ।। तम हो सामृथ धारी ।।

बिच मानीनता लेत भुकासी ।। मोआ के सिर पर भारी ।। ३ ।। हर

में तो नांही नांही कोए सांमा ।। सत कहु परदा फारी ।

जो जानो सो कहो अषो कहे ।। मे रहा कर फारी ।।४ ।। हर

: गु० व० सों० अहमदाबाद, ह०लि०पो० संख्या ७४० :

अथ पद लिष्यते ।। राग वसंत ।।

:८: आली सघन कुजन मे पेलनजा हे । जाकुं हरीहर अज हि चाहे ।।

प्रीतम ने मोहि दीनी सेन ।। आप चाहत मोए मुकुट मेल ।। आली

नैन वेन रस रुप गात ।। जा मध्य हार नही समात ।।

एसे जीत तीत नीत बिलास ।। पियु के साधुं मेरा सास ।। आ ।।

आपस जे मोपें सींगार ।। बन मालन के सारे सार ।।

अर अंतर ही राषी मोर ।। तन मन बासं जो मेरा होर ।। आ ।।

रत्य वसंत को एही चिह्न ।। जीत तीत फुले कमल नेन ।।

सकल भाव गुलाल लाल ।। दाबो चलत नही रुप ख्याल ।। आ ।।

सब सखीयति भई निसंष ।। प्रीतम प्रेम न छूटे अंक ।।

अषा वसंत की एही बात ।। पीया प्यारी रस रूप जान्य ।। आ ।।

:६: जिआ केसो रुप तेरो केसो नांम ।। क्वन बरन तेरो कोन गाम ।। टेक ।।

जिया कहा यो कोन जात । क्यो न सोचत दिन हि रात ।।१।।

जाहि सरीर को राखे मांन । क्षणभंगुर सोही नीदांग ।।

सोच विचारी देखे नांही ।। काल करम के हाथ बेकाये ।।२।।

किया संभाली अपनी आथ । तब सब मिट गयो मिथ्या बाद ।।

बिन हि बिचारे जीव नाम । सद विचारे पायो आराम ।।३।।

हे ज्यां को त्यों संभालो आप । अणलिंगी सदा अमाप ।।

तीहां न लागे करम काल ।। निज धांम देख्यो नीराल ।।४।।

तासे ताकर चौद लोक ।। प्रगट प्रभाव हे रोका रोक ।।

आपोपो ऐसो हे एम ।। अषा संभालो गुरु के बेन ।।५।।

Appendix - 1 E

परिशिष्ट १ -इ

अप्रकाशित हिन्दी रचना

पद

: फा० गु० सा० स० बम्बई, ह० लि०पों० संख्या -११८ :

पदों की प्रथम पंक्तियां

:१: कहा बरनु ओ धामकी

:२: मनो रे पिंड पहेचान तुं नीके ।

:३: समफ ले पिंड प्रति मन मोह्ना

:४: सो घन ध्याता जे ध्येकु विचारे

:५: बडी बात निरंजन प्यारे की

:६: एसी जात सोनारी मेरी हो

:७: ओलख्या आप अरी अल्पाना

:८: संतो एसा पद निरवानो

:९: समफ पीर साईयां हे भाई

:१०: मन मन मे आलोच समाओ

:११: हे हरि समफ के रहेसे

:१२: संतो समफ सीधी ओर

:१३: आपे आप आनंद अच्युत अज

:१४: नरहरि तु हि निरंजन राम

:१५: आत्मा देख्यो सोच विचारी

:१६: हरिकी लीला नाव्ये बिचारे

:१७: तिनकु दु:ख नहि त्रैलाके

:१८: जे नर आत्म तत्व विचारे

:१९: पद निरवाण मिल्या जाइ मनवा

:२०: मन मरदान नीभडो भरा, मली गेर मे पाई

=========